प्रकृति की कविता की तरह है भोपाल शहर

राजेश जोशी

भोपाल-शहर भी है और मध्यप्रदेश की राजधानी भी । मगर वह इतना ही नहीं इससे भी अधिक है एक कविता की तरह । कविता - जो प्रकृति ने लिखी है शैल शिखरों और घाटियों में जो तैरती है भोजताल की लहरों पर नौका की तरह और बहती है हवा में तरंग बन कर । जब भोपाल भोजपाल था तब भी प्रकृति की कविता थी और आज भी जब वह राजधानी है प्रकृति की कविता बहती है उसकी शिराओं में रक्त की तरह सौन्दर्य की ऊष्मा और आनन्द के झरने की तरह । भोपाल प्रकृति का सम्मोहन राग है जिसमें शिखरों का आरोह और घटियों का अवरोह समाया है एक अनुराग है जो ताल के तल पर छलछलाया है एक भाव है जिसने मन को गुदगुदाया है । सर्पीली सरसराती सड़कों और भव्य तथा भारी भवनों को हरीतिमा का दुकूल उढ़ाकर अपने में ही तन्मय सा हो गया शहर । आमंत्रण सा देती नीली आँखों जैसे लगते सरोवर और समा जाने की इच्छा उत्पन्न करती शिखरों और घाटियों में सजी इमारतों की आनंद वाटिकाएं । सरिता की तर सरसराती सड़कों के आसपास प्रहरी से तने खड़े वृक्षों के ऊपर लक्ष्मी-नारायण शिखर से उठती आरती की पुकार हो जाती है ताजुल मस्जिद से उठी अजान से एकाकार और बन जाती है सौहार्द का प्रेम राग ।

यह जो भोजताल है यही भोपाल के सौन्दर्य का भराव है और यही ग्यारहवीं शताब्दी का इंजीनियरिंग का सबसे बड़ा कमाल है । नदियों को मोड़कर और पहाड़ों की दूरियों को जोड़कर राजा भोज ने जब इसे बनवाया था यह 350 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ था जिसके बीच मण्डीदीप एक द्वीप की तरह बसा था जहाँ मण्डी भरती थी और नौकाओं से व्यापार होता था । इसीलिए जब भोपाल अज्ञात था भोजताल दूर-दूर विख्यात था और इसके बारे में प्रसिद्ध था ताल तो भोपाल ताल शेष सब तलैया । होशंगाबाद की सनक ने बाँध नहीं तोड़ा होता तो आज भी यह अपने विराट रूप में होता । किन्तु क्षीण होकर भी यह भोपाल के सौन्दर्य का कलश है । जिसके गहरे जल में पड़ती नीले आकाश की परछाई में तिरोहित होता रहता है शहर जिस पर तैरती रंग-बिरंगी नौकाएँ और फव्वारों से परावर्तित होती किरणें भूमि पर उतार लाती हैं बादलों का इन्द्र धनुष ।

ऊपर से देखो तो भोपाल लगता है जंगल में बसा एक शहर और इस शहर में फिर बना हुआ है एक जंगल जहां पक्षियों का कलरव है हिरणों की कुलांचें हैं शेरों की दहाड़ है और नागों की फुफकार है । शहर में बसे इस जंगल का नाम वन विहार है । पीछे पहाड़ आगे समुद्रसुत सा सरोवर और बीच में जंगल ही जंगल । लगता है प्रकृति अपने समस्त रूपों

को यहाँ एकाकार करती है वन का मन मानव के मन से मिलता है और ईश्वर धरती पर उतर कर आनंद की कविता लिखता है । इस ओर भीमबैठका में आदि मानव की अनंत कला कामना का ज्वार है तो उस ओर साँची में अनंत करूणा का शान्ति भाव है । भोपाल में दोनों मिल कर एकाकार हो जाते हैं । कभी मानव संग्रहालय में घूमते तो कभी भारत भवन में साधना करते मिल जाते हैं । पुरातन कन्दराओं की कला से लेकर आधुनिक कला ज्ञान और विज्ञान के केन्द्रों को अपने में समाए हुए है भोपाल शहर । प्रकृति की गोद में रखे पुष्प की तरह भोपाल शहर ।

.....